जेको पियो किरी, सामी साध संगति में,
मिलियो तंहिं माइल खे, सुतहि सिधि सुपिरीं,
सामी सुख संसार जा, वियसि सभि विसिरी,
अचे कोन फिरी, जनम मरण जे दुख में.

सत्संगति की महिमा का वर्णन करते हुए सामीजी कहते हैं, 'जो साधारण जीव सच्चे साधु-संतों की शरण में जाता है, ऐसे श्रद्धावान एवं निष्ठावान को अपने आप ही प्रियतम परमेश्वर की प्राप्ति हो जाती है । ऐसी अमर एवं सत् वस्तु मिल जाने पर भला उसे संसार के नाशवान एवं क्षणभंगुर सुखों का स्मरण क्यों होगा ? वह तो ईश्वर-मिलन का अलौकिक सुख और आनंद प्राप्त करता रहता है। उसके जन्म-मृत्यु के सभी दुख दूर हो जाते हैं तथा वह दुबारा जन्म-मरण के फेरे में नहीं पड़ता। (यह मुक्ति की अवस्था है।)

मनुष्य को जन्म-मरण के कुचक्र से मुक्त करने वाला होता है सच्चे साधु-संतों का संग। सत्संग। संतों की संगत/संगति। अपनी किसी कामना की पूर्ति करने के लिए साधारण मनुष्य संतों के पास जाता है। परंतु संत कामना-पूर्ति करने वाले नहीं होते। संतों में देवत्व होता है। उन्हें सत्य का ज्ञान हुआ होता है। वे सर्वज्ञ होते हैं। और सत्य को ही धारण किये होते हैं। वे संसार में रहते हुए भी अलिप्त रहते हैं, कमल के फूल की तरह। समाज को सत्य का मार्ग दिखाकर, उसकी ओर उन्मुख करना और परमेश्वर के भजन स्मरण में सामान्यजनों का मार्गदर्शन करना उनका काम होता है। यह उनका परोपकारी स्वभाव है, जो समाज के लिए हितकारक है।

साधु-संतों का सत्संग-मिलन परम सुख प्रदान करने वाला होता है। इस परम सुख के सामने जगत् के सभी भौतिक सुख बहुत छोटे या तुच्छ माने जा सकते हैं। संतों की संगत करने के महत्व को संत कबीर इस प्रकार अंकित करते हैं,

संगत कीजै साधु की, कभी न निष्फल होय।
लोहा पारस परस ते, सो भी कंचन होय।।

सामान्य व्यक्ति को भी महान कर देने की शक्ति सत्संग में होती है। सत्संग और संत-सेवा में ही मनुष्य का कल्याण है। यह मोक्ष-मुक्ति पाने का प्रवेश द्वार है। संत कबीर के ही शब्दों में-

कोटि कोटि तीरथ करै, कोटि-कोटि करूं धाम।
जब लग साधु न सेवई, तब लग कच्चा काम।।

■